काजरी कृषि एप की डाउन लोडिंग एवं प्रयोग

दीपिका हाजोंग

डिजिटल तक्नीकों का महत्व

किसानों को तकनीक के अलावा अन्य कई सूचनाओं की आवश्यकता होती है। अब किसानों को खेती को एक व्यवसाय (व्यापार) के रूप में, इससे जुड़ी प्रणाली, उप–प्रणाली के साथ प्रशासन, किसानों की पहल, विपणन सूचना व अनगिनित सहयोगियों जो कि कृषि उत्पादन से जुड़े है की आवश्यकता होती।

किसान व उनके सहयोगी को तीन मुख्य उद्देश्य अर्थात् उत्पादकता, लाभ व स्थिरता को संतुलित करना चाहिए। मुनाफे में बढ़ोतरी के लिए गुणवता और मूल्य संवीधित उत्पादों के तेजी से बदलते बाजार के अवसरों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उत्पादकता में वृद्धि की आवश्यकता है। इस बात की भी ध्यान रहे कि प्राकृतिक संसाधन जैसे जल, मृदा व जैविक उप उत्पाद का उपयोग भी अधिक स्थायी तरीके से हो।

कृषि के वर्तमान परिदृश्य में, लाखों किसानों तक पहुँच कर उनकी जटिल माँगों तक पहुँच पाये। हाल ही के वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में नई जानकारी व संचार प्रौद्योगिकी के विकास व प्रसार के आमने–सानमे पारस्परिक संवाद को भौतिक बाधायों की दूर करने का विकल्प मिला है।

मोबाइल ऐप

मोबाइल ऐप साफ्टवेयर है जो कि विशेष रूप से छोटे, वायरलेस कंम्प्यूटर जैसे उपकरणों, के उपयोग के लिए विकसित किया गया है।

डिजिटल तक्नीकों के माध्यम से कृषि सूचना प्राप्त करने तरीके

कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त करने के बहुत स्त्रोत उपलब्ध है। जैसे कम्प्यूटर, मोबाईल फोन, टेलीविजन इत्यादि लगभग गांव व शहरों के घरों में उपलब्ध है। अब यह कोई विलासता का पर्याय नहीं हैं अब इनका होना हर घर आवश्यकता बन गया है।

1। काजरी कृषि मोबाईल एप्लिकेशनः यह काजरी द्वारा विकसित द्विभाषी मोबाईल एप्लिकेशन है। यह एप्लिकेशन मौसम, उत्पादन तकनीक व खेती के साधनों की जानकारी देता है। किसान इसके माध्यम से कृषि सम्बन्धित सलाह व इससे किसान कॉल सेन्टर से सीधा सम्पर्क किया जा सकता हैं।

काजरी कृषि "एक द्विभाषी मोबाइल ऐप है, जो विस्तारित ज्ञान और विकसित प्रौद्योगिकियों के साथ क्षेत्र के विकास को मजबूत करने के लिए एक पहल है। यह एक किसान भागीदारी मंच है, जहाँ आईसीएआर– काजरी द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियाँ और नवाचार आसानी से सर्वोत्तम उपयोग के लिए उपलब्ध होंगे। काजरी कृषि

लगभग सभी क्षेत्रों को शामिल करता है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शुष्क क्षेत्र की कृषि उत्पादकता को प्रभावित करते हैं। सिर्फ एक बटन पर क्लिक करके, किसान मौसम, कृषि सलाह, फसल की खेती, पौधों की सुरक्षा, आईपीएम प्रैक्टिसेस, कृषि उपकरणों और सौर उपकरणों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ऐप कृषि अनुसंधान समुदाय के प्रमुख हितधारक के साथ प्रत्यक्ष संचार और हाल ही में डिजिटल क्रांति की मदद से रिश्ते को सबसे मजबूत बनाने के लिए कदम को औपचारिक बनाता है।

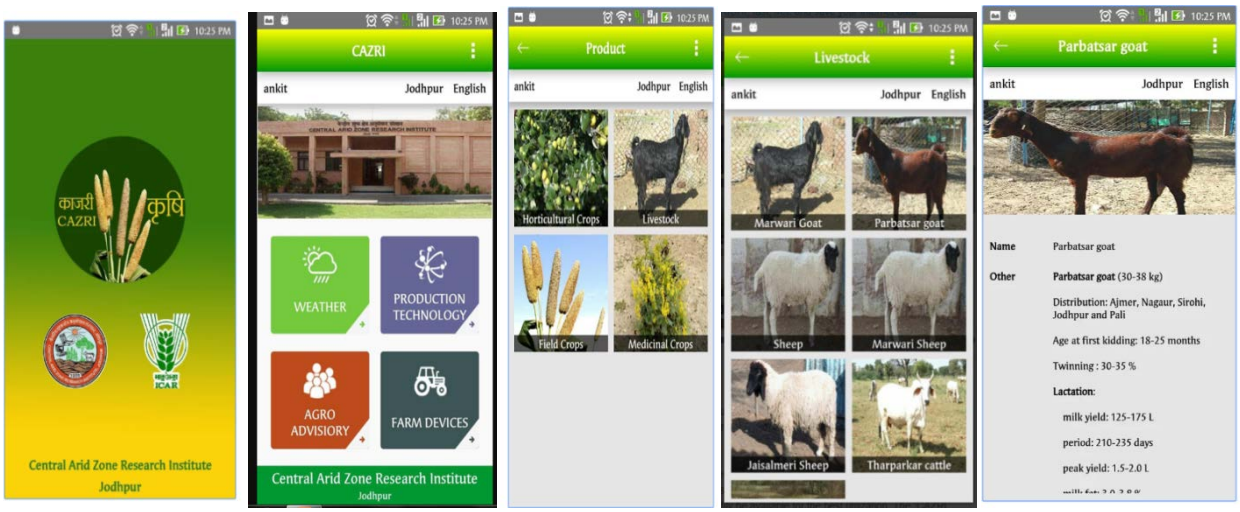

रेखाचित्र न.1: काजरी कृषि मोबाईल एप्लिकेशन

अन्य मोबाइल ऐप

2। ई–नेम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) पोंटल ,वं , ऐप

: यह एक ऑनलाईन पोर्टल है, इसके माध्यम से किसान, व्यापारी, खरीददार, निर्यातक व प्रोसेसर को कृषि उत्पाद खरीदने व बेचने की सूचना प्रदान करता है।

अ) किसान को किसी विशेष तहसील/जिले में बेचने की मजबूरी को रोकने में सक्षम होता है। क्योंकि अन्य की जानकारी करा देता है।

ब) उच्च परिवहन लागत को कम करता है।

स) एक राज्य में विभिन्न मण्डियों में उत्पाद बेचने के लिए अलग–अलग लाईसेंस रखने की जरूरत को खत्म करता है।

द) छोटी वितरित मंडियाँ।

विभिन्न कृषि उत्पाद के बाजार मूल्य की जानकारी इस पोर्टल के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। पंजीकृत होने के पश्चात् किसान ई–नेम पंजीकृत मण्डी को अपने उत्पाद का विवरण दे। किसान के उत्पाद का विवरण जांच लिया जायेगा ओर तद्नानुसार इसकी किमत की में ई–नेम कर्मचारियों द्वारा निर्धारित की जायेगी। इसकी सूचना अन्य किसानों और अन्य राज्यों में हितधारकों के लिए ऑन लाईन उपलब्ध होगी। स्थानीय व्यापारी,

देश के किसी भाग की मण्डी के कृषि उत्पाद की जानकारी प्राप्त करता है इससे किसान के पास कई विकल्प खुले रहते, की वह कही भी बेचे।

नेम साफ्टवेयर सभी मंडियों को उपलब्ध करवा दिया जाता हैं इसकी रख–रखाव पर होने खर्चों का वहन भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा वहन किया जाता है। हॉलाकि, इस कार्य में लगे कर्मचारी जो गुणवता जांच व सॉफ्टवेयर संचालन करते है, उनका खर्चा निकालने के उत्पाद विक्रय के लेन–देन शुलक से निकलता है।

लघु किसान कृषि व्यवसाय संघ को पोर्टल के प्रबंधन के लिए नियुक्त किया गया। इस समय 250 कृषि उत्पाद विपणन समितियाँ जो देश 10 राज्यों में कार्यरत है। केवल महाराष्ट्र राज्य में 45 मण्डी किसानों का लाभान्वित कर रही है। इसके लिए वेब साईट http://enam.gov.in/NAM/home/index.html पर देखा जा सकता है।

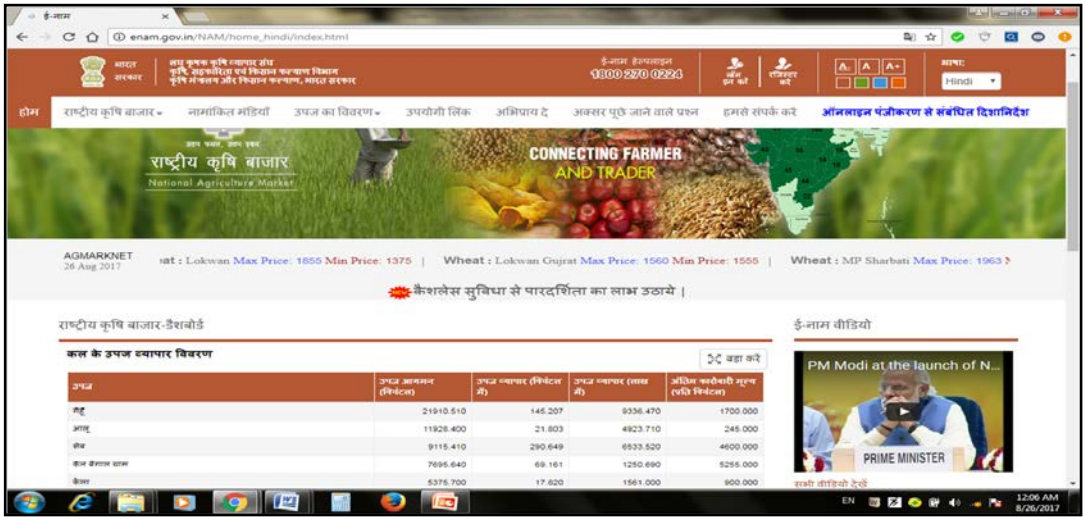

रेखाचित्र न. 2: राष्ट्रीय कृषि बाजार वेबपेज

3। **किसान पोर्टल व एप्प:** किसानों के लिए कई वेबसाईटें व पोर्टल उपलब्ध है। हॉलाकि, उन वेब साईट पोर्टल को उपयोग में कइ असुविधाओं का सामना करना भी पड़ता है। किसानों के लिए आल इन वन पोर्टल है जहां कीट, बिमारी, मौसम, कटाई पश्चात् विपणन आदि की सूचनाएं उपलब्ध है। इसका नक्शा भी दिया गया है। किसी भी फसल की राज्य विशेष, ब्लॉक/जिला की सूचना मात्र एक क्लिक से सामने दिखती है। एक बार पंजीकरण होने के पश्चात् किसान समस्त फसलोत्पादन की सूचना एस.एम. एस., ई मेल, दृश्य श्रवण से अपने द्वारा चुनी भाषा में प्राप्त करता है। इन सूचनाओं से संबंधित प्रश्नों का निराकरण व पुष्ठि इस वेव पोर्टल पर कर सकता है। वेब–लिंक: http://www/farmer/gov.in/

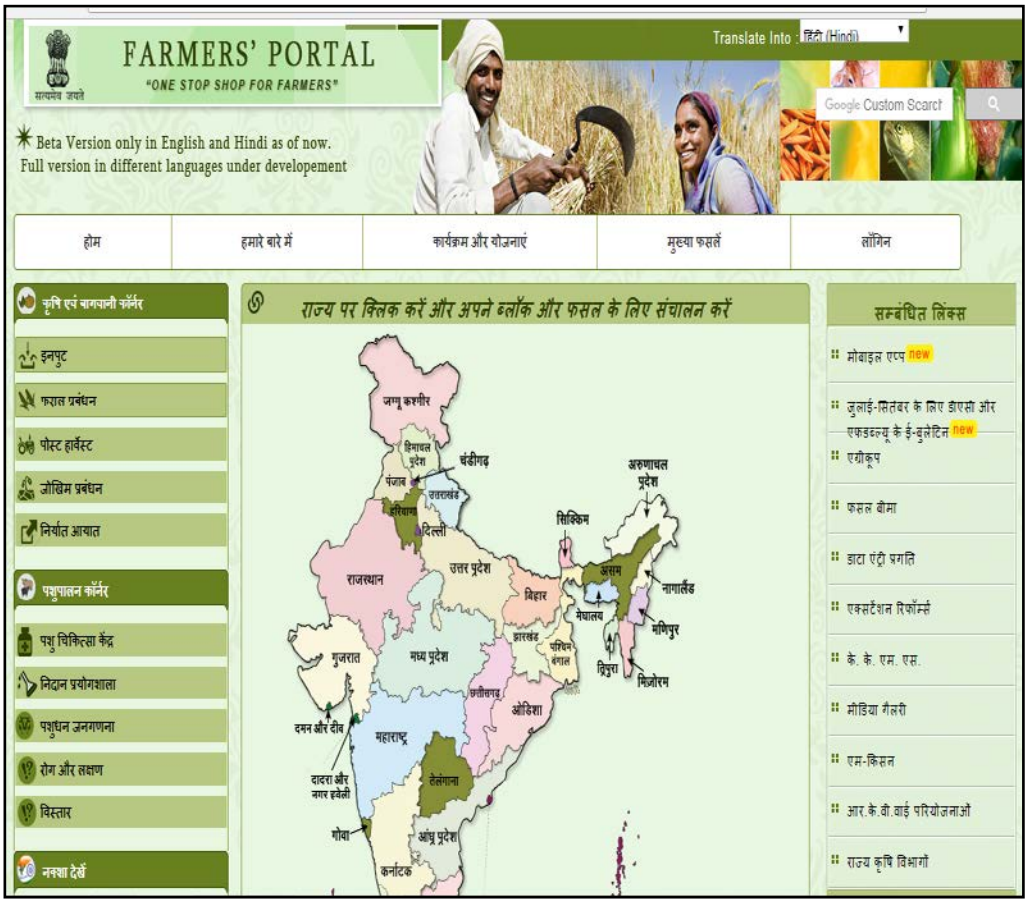

रेखाचित्र न. 3: किसान पोर्टल व एप्प

4। **एम–किसान पोर्टल एवं एप्प:** किसान अपने मोबाईल फोन पर समय–समय विशिष्ट क्षेत्र व फसल की जानकारी प्राप्त कर सकते है। इसके लिए आवेदन की आवश्यकता नहीं होती है। उपयोगकर्त्ता इसके माध्यम से किसान एम.एम.एस. का लेन देन कर सकता है। 51969 या 7438299899 एस.एम.एस. भेजकर चाही गई सूचना प्राप्त कर सकता है। केन्द्रीय और राज्य सरकारों के विभिन्न संगठनों व विभागों के अधिकारी इस पोर्टल में पंजीकृत है। आई.वी.आर. आवेदन से पूर्व की गई तकनीक सम्बन्धित रिकॉडिंग को वास्तविक स्थिति के अनुसार प्राप्त कर सकते है।

पोर्टल पंजीकरण के तरीके

1. किसान कॉल केन्द्र स
2. वेब
3. एस.एम.एस.
4. प्रसार– कार्यकर्त्ता किसान वीरण का संग्रहण

यह पोर्टल राज्य व केन्द्र सरकार की संस्थानों जो कृषि कार्य में है, वे अपने चयनित किसानों को वांछित भाषा में प्रदान करने में सक्षम बनता है। प्रत्येक किसान अधिकतम 8 फसलों की सूचना प्रदान करता हैं इससे लिंक (जुड़ने) के लिए एम.एम.एस. भेजकर http://mkisan.gov.in/advs/usermanualsmsportalver!.pdf

5। **किसान सुविधा एप्प:** यह किसानों को त्वरित और प्रांसगिक जानकारी प्रदान करने वाला बहु–मोबाइल एप्लिकेशन एप्प है। किसानों द्वारा कृषि सलाहकारों, मौसम, बाजार, समन्वित कीट प्रबन्ध, रोग नियंत्रण सम्बन्धि जानकारी प्राप्त की जाती है। नजदीकी क्षेत्र के संबंध में चरम मौसम, बाजार–भाव, फसलों की जानकारी प्राप्त कर लेता है।

रेखाचित्र न. 4: किसान सुविधा मोबाईल एप्लिकेशन

6। **कृषि बाजार एप्प:** इस एप्प के जरिये 50 किमी की त्रिज्या में कृषि उत्पादों के बाजार भाव की जानकारी प्राप्त करता हैं यह एप्प जीपीएस के सुविधा से 50 किमी के अन्दर जिन्सों के बाजार भाव प्रदान करता है। इसमें किसी विशेष इलाके की फसल के भाव बिना जी.पी.एस. के भी जान सकते है।

7। **उमंग (एकीकृत मोबाइल मोबाईल एप्लिकेशन नियू ऐज गर्वनेन्स):** इसके माध्यम से सभी सरकारी योजनाओं और सेवाओं के लिए एक एकीकृत पहुंच प्रदान की जाती है। यह डिजीटल इण्डिया आंदोलन की पहल का हिस्सा है। यह मास्टर एप्लिकेशन के रूप में कार्य करता है जो 200 आवेदनों को एकीकृत करके लगभग 1200 सेवाऐं प्रदान करता जो कि केन्द्र, राज्य, स्थानिय निकाय व निजी क्षेत्र के अधीन संचालित है) इसका प्राथमिक उद्देश्य एकल माध्यम से बहु–सूचना प्रदान करना है।

8। **फसल बीमा पोर्टल व मोबाईल एप्लिकेशन:** इस पोर्टल का शुभारम्भ प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण हुई फसल की क्षतिपूर्ति के लिए वित्तिय सहायता प्रदान करना है। फसल बीमा योजना में खरीफ के लिए 2 प्रतिशत प्रीमियम तथा रबी के लिए 1.5 प्रतिशत प्रीमियम रखा गया। यह दर सम्पूर्ण भारत में एक समान है तथा शेष प्रीमियम का भुगतान सरकार द्वारा किया जायेगा। अधिक जानकारी के लिए नीचे लिखे नंबर या ईमेल पर संपर्क कर सकते हैं। फोन न0. 011–23388911, ईमेल– help.agri-insurance@gov.in

रेखाचित्र न.5 : प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना मोबाईल एप्लिकेशन

9। माई ऐग्री गुरू: यह किसानो का एक डिजिटल मंच–है जिसका उद्धेश्य सम्पूर्ण कृषि समुदाय का एक एकीकृत नेटवर्क जोड़ना है। यह मंच देश भर में किसानों और कृषि विशेषज्ञों को जोड़ता है उनके विचारों, विचारों और सूचनाओं के आदान–प्रदान द्धारा बनाने में सक्षम हो रहा है।

एक ही स्थान पर सभी फसल सें संबंधित जानकारी और कृषि सलाहाकार, इसमें कृषि संबंधी गतिविधियों कैलेंडर, फसल की स्थिति का आत्म–निदान, नई प्रैद्योगिकियां और फसल और किसान की सफलता की कहानियों आदि नये–नये प्रयोगो को शामिल किया गया है। किसान अपनी समस्या का तुरन्त समाधान फसल छवियों को एक प्राप्त करने के लिए अपनी फसल का फोटो माई ऐग्री गुरू को भेज सकतें है।

केस स्टडी हरीश धंदेव

राजस्थान के हरीश ने सरकारी नौकरी छोड़कर एलौवेरा की खेती करना शुरू किया जिससे वे करोडो की कमाई कर रहे है। जैसलमेर स्थित पैतृक भूमि में एलोवेरा की खेती करने का फैसला किया। खेती शुरू करने से पहले इन्होनें पहली बार कृषि विभाग से मिट्टी की जाँच करवाई।

जाँच के आधार पर हरीश को कम पानी वाली परंम्परागत फसले जैसे बाजरा ग्वार और मूंग की खेती करने का सुझाव दिया। हरीश कहते हैं, जैसलमेर क्षेत्र में इन परंम्परागत फसलो की बाजार में अच्छे मूल्य नहीं मिलने के कारण ये किसानों के लिए कम लाभकारी होती हैं। तथा हम पहले से ही इनकी खेती कर रहे थे। कृषि विभाग ने हमें एलोवेरा की खेती करने की जानकारी नहीं ही सुझाव दिया।

विभिन्न उपलब्ध ऑनलाइन संस्थाओं के माध्यम से किया तथा माई ऐग्री गुरू, जो देश भर में कृषि विशेषज्ञों के साथ किसानों को विचारो के आदान–प्रदान की अनुमति द्वारा इसके बारे में जानकारी हासिल की वह राष्ट्रीय पार्टलो का उपयोग कर राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय बाजार में अपने उत्पादो का आसानी से बेच सकते है।

हरीश के पास शुरू में 80,000 पौधे थे जो तेजी से बढ़कर सात लाख हो गये। महीनों के भीतर हरीश राजस्थान के अपने एलो वेरा के लिए दस क्लाइंट प्राप्त करने में कामयाब रहें। लेकिन जल्द ही हरीश को पता चला कि एलोवेरा के पौधे से ज्यादा उससे निकाली गये जल से अधिक पैसा कमाया जा सकता हैं। तो हरीश ने अपने खेत पर ही एलोवेरा के जल निकालने की मशीने लगाई तथा खेती करने वाले किसानो व मजदूरो को प्रशिक्षित किया। जिससे उन्हे कुछ अतिरिक्त आय भी मिल गई।

पिछले कुछ वर्षो में, हरीश ने ओर जमीन खरीदी है और अब एक सौ एकड़ में एलोवेरा की खेती करता है। उनकी कंपनी, धंदेव ग्लोबल ग्रुप, राजस्थान में जैसलमेर से 45 किलोमीटर दूर धिसार में स्थित है और उसका सलाना कारोबार रू. 1.5 से 2 करोड़ रू. है।

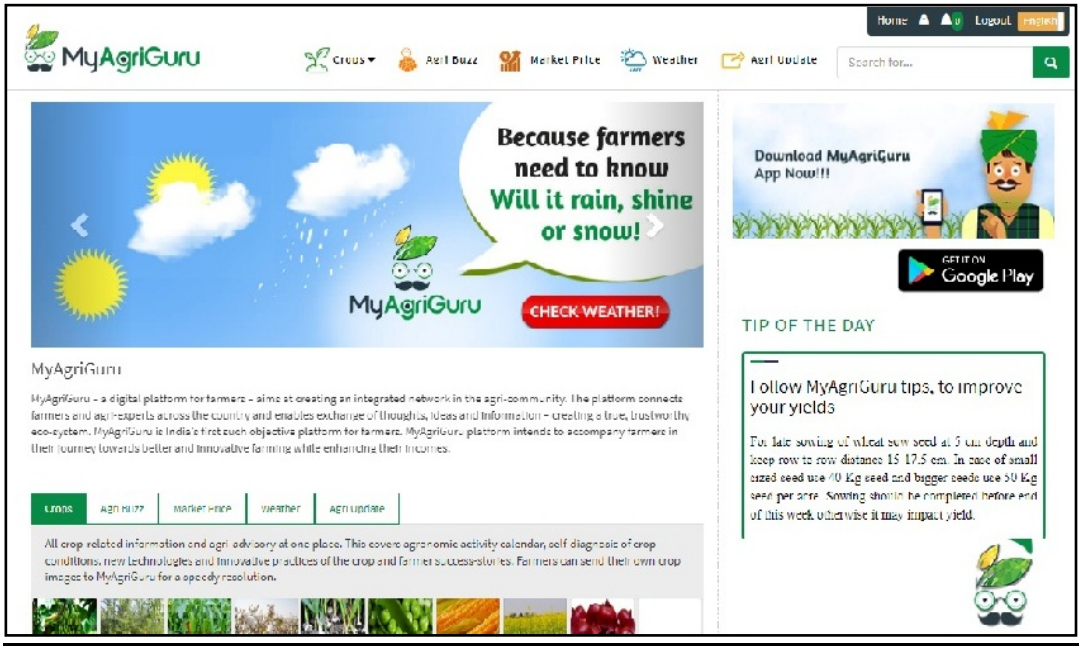

रेखाचित्र न.6 : माई ऐग्री गुरू वेबपेज

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधिनस्थ विभिन्न संस्थानों द्वारा किसानों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए मोबाईल सुविधाएं प्रदान की है, वे निम्न प्रकार है।

तालिका : 1 विभिन्न संस्थानों द्वारा विकसित मोबाइल एप्लिकेशन

क्र.सं.	मोबाइल एप्लिकेशन	संस्थान का नाम	उद्देश्य
1.	काजरी कृषि	केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर	मौसम, फसल व पौध संरक्षण पर सूचना
2.	पूसा कृषि	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली	कृषि व्यापार उद्यम को बढ़ावा देने के लिए
3.	मशरूम	मशरूम अनुसंधान, निदेशालय, सोलन	मशरूम उत्पादकों के लिए
4.	एन.आर.सी.पी.	राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र सोलापुर	वैानिक तरीके से अनार उत्पादन
5.	उर्वरक गणक	केन्द्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोआ	खेत के आकार/पेड पौधों की संख्या के अनुसार उर्वरक गणना प्रदान करना।
6.	कीटनाशक गणक	केन्द्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोआ	बग को दूर रखने के लिए कीटनाशक की आवश्यकता की गणना करके बताना।
7.	पौधों की संख्या	केन्द्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोआ	पोधों की संख्या बताना
8.	बीज कणक	केन्द्रीय तटीय कृषि अनुसंधान	बीज दर की गणना

		संस्थान, गोआ	
9.	कृषि विज्ञान केन्द्र एप्प	भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली	कृषि विज्ञान केन्द्र में उपलब्ध सुविधाएं व समय–समय पर आयोजित गतिविधियों की जानकारी
10.	पशु प्रजनन	भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान व भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान	पशु व पशु चिकित्सा रोग, रोकथाम व उपचार के बारे में सामान्य विवरण
11.	काली मिर्च	भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कालीकट	थ्कसानों को काली मिर्च के लिए मदद करना।
12.	चावल विशेषज्ञ	राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कट्टक	चावल फसल में समय–समय पर लगने वाले कीट, बिमारी, पोषक तत्व, घास व नेमाटोड की रोकथाम सूचना देना।
13.	चना मित्र	भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर	किसानों व अनुसंधान कर्त्ताओं को चना फसल के लिए जोड़ना
14.	वनामी स्रिम्प एप्पा	केन्द्रीय कड़वाजल एक्वाकल्चर अनुसंधान संस्थान	सफेद स्रिम्प खेती के लिए सूचना देना
15.	पोषक– चार्ट	राष्ट्रीय पशु पोषण व फिजियोलोजी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर	डेयरी मवेशियो व भैसों के पोषण का मार्गदर्शन करना।
16.	टमाटर की खेती	भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर	टमाटर की खेती का प्रबन्धन व निदान समाधान देना।
17.	आम की खेती	भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर	आम फसल प्रबन्धन निदान समाधान देना
18.	ई–कल्प	केन्द्रीय बागान फसल अनुसंधान संस्थान, कासर गोड	नारियल खेती के तरीके

डिजिटल तकनीकं किसान व अन्य संस्थाओं के बीच संवाद की महत्वपूर्ण कड़ी हैं जिस तरह से देश का औद्योगिक, परिवहन, निजी कम्पनी इत्यादि आज जिस ढंग से डिजिटाईल हो रहे तो कृषि क्यों पीछे रहे। अब समय आ गया है कि किसानों को नवीनतम तकनीक प्राप्त कर विकासशील देश के साथ बढ़े।